ISSN: 2583-8288
Technical Article
Published on: 31/03/2025

ग्लैंडर्स: अश्व प्रजाति का घातक रोग

मोनिका भारद्वाज एवं मधु सुमन
डॉ जी.सी. नेगी पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय (सीएसएचपीकेवी, पालमपुर)
DOI:10.5281/Vettoday.15161926

ग्लैंडर्स अश्व प्रजाति में होने वाला एक अत्यधिक संक्रामक और उल्लेखनीय रोग है। यह रोग एक ग्राम-नेगेटिव एवं ऐच्छिक इंट्रासेल्युलर जीवाणु बर्कहोल्डेरिया मैलेई के कारण होता है। बी. मैलेई मुख्य रूप से घोड़ों, गधों और खच्चरों को संक्रमित करता है। वर्ष 2006 से ग्लैंडर्स के नियमित प्रकोप विभिन्न राज्यों से सुचित किये गये हैं। ग्लैंडर्स से ग्रासीथ अश्वो के साथ लंबे समय तक संपर्क से बी. मैलेई संक्रमण मनुष्यों (पशुचिकित्सक, अर्ध-पशुचिकित्सक, घोड़ों की देखभाल करने वाले और बूचड़खाने के कर्मचारी इत्यादि) में भी साक्रिया रूप धारण कर सकता है। अधिक गौर करने वाली बात है कि जनवरी 2025 में फिर से हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के घोड़ों में ग्लैंडर्स पाया गया है। यह इस बात की और संकेत करती है की पशु चिकित्सकों को नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के साथ ग्लैंडर्स का निपटान करने की आवश्यकता है।

ग्लैंडर्स फैलने के कारण

बी. मैलेई जीवाणु का संचरण दूषित भोजन और पानी का अंतर्ग्रहण करने से या ग्लैंडर्स संक्रमित अपघर्षक त्वचा के माध्यम से मुख्य रूप से होता है। इसके अतिरिक्त संक्रमण दूषित फ़ोमाइट्स के माध्यम से भी फैल सकता है। लंबे समय से संक्रमित रोगसूचक घोड़े अतिसंवेदनशील जानवरों के लिए भी संक्रमण के स्रोत हो सकते हैं।

ग्लैंडर्स के प्रकार

मुख्यतः ग्लैंडर्स तीन प्रकार से होता है: फेफडों का ग्लैंडर्स, नाक का ग्लैंडर्स एवं त्वचीय ग्लैंडर्स। अधिकतर प्रकोपों में ये तीनों प्रकार स्पष्ट रूप से भिन्न नहीं दिखाई देते और एक ही पशु में एक साथ हो सकते हैं। इसका तीव्र रूप अक्सर गधों और खच्चरों में ज्यादातर पाया जाता है।

चिकत्सीय संकेत

ग्लैंडर्स की ऊष्मायन अवधि लगभग 3 से 14 दिन है। अधिकतर गधों और खच्चरों में तीव्र और घातक ब्रोन्कोपमोनिया देखा जाता है, जबकि क्रोनिक त्वचीय रूप अधिकांश घोड़ों में दिखाइ देता है। संक्रमित अश्वो के नाक से बहता हुआ स्राव और नाक के पर्दे के ऊपर अल्सर देखे जाते हैं। इसके साथ उदर पेट, दूरस्थ अंगों, मुंह और गर्दन के चमड़े के नीचे और अल्सरेटिंग नोड्यूल होते हैं। इन सब लक्षणों के बढ़ने से जानवर की मौत 1 से 4 सप्ताह में हो सकती है । अधिकतर समय गधों में मृत्यु दर अधिक होती है।

निदान

ग्लैंडर्स का निदान निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है जैसे माइक्रोस्कोपी, बैक्टीरिया अलगाव, आणविक पहचान, मैलीन परीक्षण, पूरक निर्धारण परीक्षण (सीएफटी), एलिसा, वेस्टर्न ब्लॉट,

मोनिका भारद्वाज एवं मधु सुमन

अप्रत्यक्ष इम्यूनोफ्लोरेसेंस और गुलाब बंगाल धुंधलापन। सबसे महत्वपूर्ण पॉलीमरेज़ चेन रिएक्शन (पीसीआर) बी मैलेई का पता लगाने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

रोकथाम एवं नियंत्रण

बी मैलेई संक्रमण के खिलाफ जानवरों और मनुष्यों के लिए अभी तक विशिष्ट उपचार और टीके उपलब्ध नहीं हैं। भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग ने ग्लैंडर्स नियंत्रित करने के लिए 2019 में ग्लैंडर्स पर राष्ट्रीय कार्य योजना शुरू की है। हालाँकि, ग्लैंडर्स के नियमित प्रकोप पशु चिकित्सकों, घोड़ा मालिकों, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं के सामने रोग के प्रसार को रोकने, नियंत्रण और उन्मूलन के लिए उचित कार्रवाई निर्धारित करने में कई चुनौतियाँ पैदा करते हैं। हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि हिमाचल प्रदेश में निर्माण कार्यों, पर्यटन, सार्वजनिक परिवहन, वस्तुओं के परिवहन, कार्टिंग, घुड़सवारी कार्यक्रमों, पुलिस और सैन्य/अर्धसैनिक बलों में घोड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस उद्देश्य से प्रदेश में ग्लैंडर्स उन्मूलन कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन के लिए पशु चिकित्सकों, पैरा-पशुचिकित्सकों और चिकित्सकों के बीच अश्व और मानव ग्लैंडर्स के बारे में जागरूकता महत्वपूर्ण है। अश्वपालकों को नियमित आधार पर ग्लैंडर्स के शुरुआती लक्षणों और बीमारियों की रोकथाम के संबंध में जागरूकता दी जानी चाहिए।

किसानों के लिए ये जानना अत्यंत आवश्यक है कि यदि जानवर ग्लैंडर्स के लिए सकारात्मक पाए जाते हैं, तो सब प्रकार के नियंत्रण और रोकथाम कदमो का अधिनियम के तहत आवश्यकतानुसार पालन किया जाना चाहिए। इस्के अंतरगत संक्रमित जानवर को उसकी जगह से तुरंत हटा देना चाहिए। प्रभावित अस्तबलों को कीटाणुनाशक सोडियम हाइपोक्लोराइट (500 पीपीएम), 70% इथेनॉल, 2% ग्लूटेराल्डिहाइड, बेंजालकोनियम क्लोराइड (1/2000), अल्कोहल में मरक्यूरिक क्लोराइड, पोटेशियम परमैंगनेट से कीटाणुरहित करना चाहिए। अत्यंत आवश्यक होने पर, सकारात्मक जानवर को बंद वाहनों में नष्ट करने के लिए उपयुक्त क्षेत्र में ले जाना चाहिए। निकट संपर्क में रहने वाले व्यक्तियों को पूरे शरीर पर एप्रन, फेस मास्क, रबर/लेटेक्स सहित सुरक्षात्मक कपड़े डिस्पोजेबल दस्ताने और लंबे जूते पहनना चाहिए। सर्वप्रथम जानवर को जलाने या दफनाने की विधि अपनाई जा सकती है। जानवर को दफनाने के लिए, जलधाराओं, नदी, नहरों या अन्य जल आपूर्ति से दूर उपयुक्त स्थान होना चाहिए। इसके साथ कम से कम 8 फीट गहरा गड्ढा बनाना चाहिए। वर्तमान में, ग्लैंडर्स के खिलाफ वैक्सीन के विकास के लिए वैज्ञानिक निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

उपचार:- यह स्पष्ट है कि ग्लैंडर्स का उपचार पूर्ण रूप् से जीवाणु से निजात नहीं दे सकता। फिर भी प्रायोगिक ग्लैंडर्स के उपचार के लिए सफेट्राजिड्राइम, डॉक्सीसाइक्लिन, जेंटामाइसिन इत्यादि एंटीबायोटिक्स उपयोग की जा सकती है।